# सेवा

## भाग – ३

**अकाल पुरुष के हुकुम को मानना ही ईश्वरीय सेवा है।**

**नानक घर का —**

'बै-खरीद सेवक' बन कर
'हुकमी बंदा' बन कर
'मर' कर
'मुरीद' बन कर
'पा-खाक' हो कर
'मणी-मनूरी' छोड़ कर
'स्वयं' को न्यौछावर करके

**हुकुम का पालन करना ही, ईश्वरीय मंडल की आत्मिक सेवा है।**

**सतगुर का भाणा मंनि लई विचहु आपु गवाइ ।।**
**एहा सेवा चाकरी नामु वसै मनि आइ ।।** (पृ. ३४)

गुर की टहल गुरू की सेवा गुर की आगिआ भाणी ।। (पृ ६७१)

**हुकमु बूझै सो सेवकु कहीऐ ।।**
बुरा भला दुइ समसरि सहीऐ ।। (पृ. १०७६)

**प्रेम भावना की सेवा** — ईश्वरीय मंडल में निःस्वार्थ निर्मल, निष्काम आत्मिक सेवा सतिगुरू की **प्रीत, प्यार, प्रेम-स्वैपना के चाव तथा उत्साह में ही हो सकती है।**

संत सेवा करि भावनी लाईऐ तिआगि मानु हाठीला ।। (पृ. ४९८)

**हरि की सेवा चाकरी सचै सबदि पिआरि ।।** (पृ. ५१२)

**इकि सतिगुर की सेवा करहि चाकरी हरि नामे लगै पिआरु ।।**
नानक जनमु सवारनि आपणा कुल का करनि उधारु ।। (पृ. ५५२)

नदरि करे जिसु आपणी तिसु लाए हेत पिआरु ।।
**सतिगुर की सेवै लगिआ भउजलु तरै संसारु ।।** (पृ. १४२२)

बहम गिआनी परउपकार उमाहा ।। (पृ २७३)

**गुरू की सेवा कौन कर सकते हैं ?**

करि किरपा जन सेवा लाए ।।
जनम मरण दुख मेटि मिलाए ।। (पृ ८६६)

**जिस कै मसतकि करमु होइ सो सेवा लागा ।।** (पृ ९६४)

**तेरी सेवा सो करे जिस नो लैहि तू लाई ।।** (पृ १०११)

जिसु हरि सेवा लाए सोई जनु लागै ।। (पृ १०७०)

जिस नो लाइ लए सो सेवकु जिसु वडभाग मथाइणा ।। (पृ. १०७८)

करमु होवै तां सेवा करै ।।
गुर परसादी जीवत मरै ।। (पृ ११७२)

तैरै हुकमि पवै नीसाणु तउ करउ साहिब की सेवा ।। (पृ १३९५)

**ईश्वरीय सेवा कैसे की जाती है** ?

**हरि की टहल कमावणी जपीऐ प्रभ का नामु ।।** (पृ ३००)

अहिनिसि नामि संतोखीआ सेवा सचु साई ।। (पृ ४२१)

करि दास दासी तजि उदासी कर जोड़ि दिनु रैणि जागीऐ ।। (पृ ४५७)

सतिगुर की सेवा सदा करि भाई विचहु आपु गवाइ ।। (पृ ६३८)

पानी परवा पीसउ संत आगै गुण गोविंद जसु गाई ।। (पृ ६७३)

गुरबाणी में गुरू के **सेवक की यूँ उपमा की गयी है** —

जो सेवहि जो सेवहि तुधु जी जनु नानकु तिन कुरबाणा ।। (पृ. ११)

सतिगुरु सेवनि से धनवंते ऐथै ओथै नामि समावणिआ ।। (पृ ११२)

जिन गुर की कीती चाकरी तिन सद बलिहारी ।। (पृ ७२५)

गुर के सेवक सतिगुर पिआरे ।।
**ओइ बैसहि तखति सु सबदु वीचारे ।।** (पृ १०२६)

**गुर का सेवकु नरकि न जाए ।। गुर का सेवकु पारब्रहमु धिआए।।**
**गुर का सेवकु साधसंगु पाए गुरु करदा नित जीअ दाना हे।।**
(पृ १०७५)

जिनि जनि गुरमुखि सेविआ तिनि सभि सुख पाई ।।
ओहु आपि तरिआ कुटंब सिउ सभु जगतु तराई ।। (पृ ११००)

हरि सेवे सो हरि का लोगु ।।
साचु सहजु कदे न होवै सोगु ।। (पृ. ११७२)

सेवक कै भरपूर जुगु जुगु वाहगुरू तेरा सभु सदका ।। (पृ १४०३)

**'सेवा' बिना भक्ति नहीं हो सकती । भक्ति ही सतिगुरू की सेवा है —**

**नामु द्रिड़ु करि भगति हरि की भली प्रभ की सेव ।।** (पृ ४०५)

से वडभागी जि गुरि सेवा लाए ।।
अनदिनु भगति सचु नामु द्रिड़ाए ।। (पृ ४२३)

**एहा भगति सचे सिउ लिव लागै बिनु सेवा भगति न होई।।** (पृ. ५०६)

गुर सेवा बिनु भगति न होवी किउ करि चीनसि आपै ।। (पृ १०१३)

**गुर सेवा बिनु भगति न होई ।।**
**अनेक जतन करै जे कोई ।।** (पृ. १३४२)

**'सिमरन' करना अथवा नाम जपना या 'शबद' अभ्यास करना ही ईश्वरीय सेवा है —**

**हरि की टहल कमावणी जपीऐ प्रभ का नामु ।।** (पृ ३००)

साहिबु सेवन्हि आपणा पूरै सबदि वीचारि ।। (पृ. ५१२)

गुरमुखि सेवा थाइ पवै उनमनि ततु कमाहु ।। (पृ ७८८)

सेवा सुरति सबदि वीचारि ।।
जपु तपु संजमु हउमै मारि ।। (पृ १३४३)

सतिगुरु सेवनि आपणा गुर सबदी वीचारि ।। (पृ १४१५)

गुरबाणी की उपरोक्त पंक्तियों से स्पष्ट है कि **सतिगुरू की सेवा कठिन**

**तथा दुश्वार है** —

हसती सिरि जिउ अंकसु है अहरणि जिउ सिरु देइ ।।
मनु तनु आगै राखि कै ऊभी सेव करेइ ।।
इउ गुरमुखि आपु निवारीऐ सभु राजु स्रिसटि का लेइ ।। (पृ ६४७)

**सतिगुर की सेवा गाखड़ी सिरु दीजै आपु गवाइ ।।**
सबदि मरहि फिरि ना मरहि ता सेवा पवै सभ थाइ ।। (पृ. ६४९)

नानक सेवकु सोई आखीऐ जो सिरु धरे उतारि ।। (पृ १२४७)

**गुर पीरां की चाकरी महां करड़ी सुख सारु ।।** (पृ १४२२)

वास्तव में ऐसी **कठिन, दुष्वार, अति सखत आत्मिक सेवा कोई विरले** बरख्शे हुए मर जीवड़े, गुरमुख प्यारे ही कर सकते हैं —

गुर की सेवा गुर भगति है विरला पाए कोइ ।। (पृ. ६६)

**कोटि मधे को विरला सेवकु होरि सगले बिउहारी ।।** (पृ. ४९५)

ऐसो जनु बिरलो है सेवकु जो तत जोग कउ बेत्तै ।। (पृ १३०२)

जिसु मसतकि गुरि धरिआ हाथु ।।
**कोटि मधे को विरला दासु ।।** (पृ १३४०)

**'सेवा' कई प्रकार की है,** जो अनगिनत रूप-रंगों के मनोभावों (various emotional feeling) के अधीन की जाती है ।

यह भावनाँए तथा उद्वेग कई रूप-रंगों-स्वरूपों में **प्रकट तथा प्रकाशमान होते हैं** ।

हमारे समस्त —

ख्याल
विचार
कर्म
धर्म
नेक-कर्म
सेवा
साधना

परमार्थ

पाठ-पूजा

दान-पुन्य

जीवन

**कई प्रकार की भावनाओं के अधीन प्रवृत्त हैं ।**

गुरबाणी 'धुर' ईश्वरीय मंडल में से सतिगुरू जी की अति सूक्ष्म **अनुभवी भावनाओं का प्रकाश** है । इसी लिए मायिकी मंडल के स्थूल बुद्धि वाले **जीव** गुरबाणी के भाव-अर्थ, **अनुभवी भेद, आत्मिक तत् ज्ञान को समझ-बूझ-चीन्ह नहीं सकते ।** इसी कारण हम सीमित बुद्धि वालों को समझाने तथा सही जीवन की राह दिखाने के लिए गुरबाणी तथा भाई गुरदास जी की रचनाओं द्वारा, अनेक **मायिकी मंडल** के **'उदाहरण'** दिये गए हैं । परन्तु हम अपने दैनिक जीवन के मामलों (routine) में **इतने गलतान हैं कि इन प्रत्यक्ष कुदरती उदाहरणों पर विचार करने या समझने की हमें फुर्सत ही नहीं तथा न ही आवश्यकता प्रतीत होती है ।**

इन अनेक कुदरती उदाहरणों में से एक उदाहरण **माँ-ममता के अधीन बच्चे की सेवा** के विषय में पिछले लेख में विस्तारपूर्वक वर्णन किया जा चुका है।

अब यहाँ कुछ अन्य **सेवाभाव सम्बंधित शिक्षाप्रद उदाहरण** प्रस्तुत किए जाते हैं।

प्रत्येक वृक्ष एक नन्हें से बीज से उत्पन्न होता है । उस बीज को धरती में से **'जीवन-रौं' मिलती है**, जिस द्वारा वह उत्पन्न होता, बढ़ता, फूलता तथा प्रफुल्लित होता है। वृक्ष में सीमित बुद्धि होने के कारण, **वह ईश्वरीय 'हुकुम' के प्रवाह में सहज-स्वभाव ही परोपकार तथा निष्काम सेवा करता जाता है।** वह स्वयं वर्षा, आंधी, तूफान, गर्मी-सर्दी सहता हुआ, हमें अपनी छत्र-छाया के नीचे, इनसे बचाता है । स्वयं कड़कती धूप सहता है तथा हमें **छाया देता है।** फूल तथा फल देता है तथा किसी से भी **भेदभाव नहीं करता** कि कोई मुसलमान है या हिन्दू, सिख है या ईसाई, पुन्य व्यक्ति है या पापी, ब्राह्मण है या चंडाल। वह सहज-स्वभाव (spontaneously) ही सब की 'सेवा' करता जाता है । इसके विपरीत हम उस वृक्ष पर अत्याचार करते हैं । दातुन तोड़ते हैं, फूल तथा फल तोड़ते हैं । वह फिर भी **कोई शिकायत नहीं करता तथा ईश्वरीय 'रजा' में मस्त होकर 'स्वयं' को न्यौछावर करता जाता है ।** उस को काट कर हम उसकी लकड़ियों का ईंधन बनाते हैं — फिर भी वह हमें सेंक देता है। जब सूख जाता है,

तब भी हम चीर-फाड कर, रन्दा लगाकर अपने लाभ के लिए प्रयोग करते हैं। वह अपने उपर **इतने कष्ट तथा अत्याचार सहते हुए — अपने आप को न्यौछावर करता रहता है** तथा सहज-स्वभाव (unconsciously) **निष्काम सेवा करता रहता है, फिर भी शिकायत तथा अहसान नहीं जताता ।**

इसी प्रकार है, गुलाब का **'फूल'** — 'जीवन-रौं' द्वारा सौन्दर्य, कोमलता, महक लेता हुआ, जब यौवन पर पहुँच कर खिलता है, तो वह अपना **'आप'** अर्थात सौन्दर्य, कोमलता, सुगन्धि बाँटना शुरू कर देता है, क्योंकि उसके गुण उसके 'स्वयं' में समा नहीं पाते तथा बिखर-बिखर जाते हैं, **इस प्रकार वह अपना 'आपा' दिन-रात बाँटता रहता है ।**

यहीं बस नहीं, यदि उसकी कोमल पंखुड़ियों को तोड़-मरोड़ कर मसल दें, या **आग पर उबाल कर 'इत्र' बना लें — तो भी इतने कष्ट तथा अत्याचार सहते हुए, फूल अपने 'आप' को बाँटने से संकोच नहीं करता** क्योंकि उसमें ईश्वरीय भाणे की रवानगी अनुसार **'आपा' बाँटने का चाव तथा 'उमाह' बना रहता है ।**

किसी **शिकवे-शिकायत या बदले की तुच्छ भावनाओं के बिना,** 'फूल' निःस्वार्थ ईश्वरीय **'हुकुम' का पालन या सेवा करता हुआ, गुरबाणी के उपदेश 'आपु गवाइ सेवा करे' का सही पालन कर रहा है ।**

इसी प्रकार 'फूल' अपने आन्तरिक रस, रंग, सुगन्धि के नशे में **अलमस्त मतवारा हो कर**, दिव्य यौवन के मद में 'उन्माद' होकर —

उमड़-उमड़ पड़ता
'स्वयं' को न्यौछावर करता
'यौवन' बिखेरता
'हुकुम' का पालन करता
'सहज खेल' खेलता
'प्रेम-स्वैपना' में

सृष्टि की **निष्काम सेवा करता हुआ, अपना 'जीवन' सफल कर रहा है** तथा गुरबाणी की निम्नलिखित पंक्तियों को सहज-स्वभाव, अनजाने तथा भोले-भाव ही **स्वीकार व कमा रहा है।**

आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु ॥ (पृ. ४७४)

ससत्रि तीखणि काटि डारिओ मनि न कीनो रोसु ।।
काजु उआ को ले सवारिओ तिलु न दीनो दोसु ।। (पृ १०१७)
फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ ।। (पृ १३८१-८२)

इन उदाहरणों में से वृक्ष तथा फूल में **स्थूल चेतना** तथा **सीमित बुद्धि** होने के कारण वह अपने 'अन्तर्गत लिखे हुकुम' अनुसार, अनजाने तथा सहज-स्वभाव ही, **सृष्टि की सेवा कर रहे हैं** — जिस कारण उन्हें **अपनी सेवा का अहसास नहीं होता तथा अहम् की भावना नहीं होती** । इस लिए उन की यह भोले- भाव सेवा (unconscious service) **निःस्वार्थ तथा निष्काम होती है**, जिस से उन का कल्याण तथा आत्मिक उन्नति होती जाती है।

परन्तु मनुष्य को अकाल पुरुष ने अत्यन्त सूक्ष्म चेतना तथा तीक्षण बुद्धि प्रदान की है — जिसकी सूक्ष्म भावनाओं के अधीन वह 'सेवा' करता है। **ऐसी सेवा के तहत अहम् का भ्रम भुलाव, स्वार्थ तथा मैं-मेरी का अंश काम करता है** । इसी कारण **मनुष्य की सेवा निःस्वार्थ तथा निष्काम नहीं कहला सकती**। 'अहम्-मयी सेवा' मायिकी दुनियां के कार्मिक-नियम (karmic law) के अधीन प्रवृत्त होती है, जिससे हम कर्म-बद्ध होकर परिणाम भोगते हैं तथा आत्मिक मंडल में हमारा कल्याण नहीं हो सकता ।

**'माँ'** की अपने बच्चे के लिए श्रेष्ठ तथा अलौकिक सेवा, यद्यपि बड़ी कठिन तथा **'स्वंय' को न्यौछावर करने वाली है** — परन्तु इसके पीछे **'मैं-मेरी' का अपनत्व होता है। वह ऐसी सेवा पड़ोसियों के बच्चों की नहीं कर सकती**। इसलिए **'माँ'** की सेवा **'कार्मिक-कानून'** के अन्तर्गत आती है। माँ बच्चे को **अपना समझ कर मोह में फँस जाती है,** तथा इसी 'मोह' में गलतान होकर, 'माँ-प्यार' में ईश्वरीय **'देन' को भूल जाती है**, जो बच्चे की परवरिश के लिए उसके हृदय में **बच्चे के जन्म के समय उत्पन्न हुई थी**।

यदि 'माँ' अपने 'अन्तर्गत लिखे हुकुम' अनुसार उत्पन्न हुई 'माँ-प्यार' की भावना के स्रोत **अकाल पुरुष के शुक्राने में,** बच्चे का पालन करती तथा **अपने अपनत्व को न महसूस करती,** तब उसकी सेवा **निःस्वार्थ तथा निष्काम होती,** जिस से उस की सेवा सफल तथा कल्याणकारी होती।

यहाँ **'मदर टेरेसा'** (mother Teresa) का उदाहरण अनुकूल होगा — जिस ने बिना अपनत्व तथा मोह के अपने इष्ट ईसा-मसीह (Christ) के प्यार की

मस्ती में अनेक अपाहिज, यतीम तथा बे-सहारा बच्चों के पालन-पोषण की **निःस्वार्थ तथा निष्काम सेवा की है।**

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि —

1. 'सेवा' के पीछे **'भावना' अनुसार ही फल मिलता है।**

एक नदरि करि केवै सभ ऊपरि **जेहा भाउ तेहा फलु पाईऐ** ।। (पृ. ६०२)

2. मायिकी मंडल में अहम्मयी मन द्वारा **मैं-मेरी की भावना से** जो सेवा की जाती है — वह चाहे कितनी नेक तथा श्रेष्ठ प्रतीत हो, सब कार्मिक-कानून (karmic law) के अधीन आती है तथा हमें **मायिकी मंडल में ही फँसाये रखती है तथा ईश्वरीय मंडल में ले जाने के लिए कल्याणकारी नहीं हो सकती ।**

3. आत्मिक मंडल के परम-पद के **पात्र बनने के लिए, सतिगुरू के प्यार में रंग कर, निःस्वार्थ तथा निष्काम सेवा करने की आवश्यकता है।**

यह सतिगुरू की **प्यार भावना** —

1. **गुरबाणी के आन्तरिक-भाव की विचार**
2. बख्शे हुए **गुरमुख प्यारों की संगति**
3. सिमरन अथवा **नाम-अभ्यास कमाई**
4. गुरप्रसादि

द्वारा ही प्राप्त हो सकती है ।

मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ।। (पृ. १२)

प्रेम भगति नानक सुखु पाइआ साधू संगि समाई ।। (पृ. ३८४)

हरि के संत मनि प्रीति लगाई जिउ देखै ससि कमले ।। (पृ. ९७५)

**बख्शा हुआ गुरमुख जन** —

गुरू के **प्यार** में
नाम के **रंग** में
शबद की **मीठी धुन** में
**प्रीत, प्रेम, रस के चाव में**

चाव के शक्तिशाली **वेग में**
**आत्मिक उमाह के जोश में**

**जब** —

उछलता
उमड़ता
छलकता
स्वंय को न्यौछावर करता
'आपा' बांटता
स्वंय को बिखेरता है

**तब उसकी हर** —

क्रिया
विचार
दृष्टि
बोल
चाल
दर्शन
संगति

**द्वारा** —

नानक-प्यार
नाम
शबद
प्रीत
प्रेम
रस
चाव
उमाह

**का अक्स तथा प्रकाश का प्रकटाव हो रहा होता है।**

उनकी दृष्टि में कोई अच्छा-बुरा, पापी-पुन्नी तथा उच-नीच का **भेदभाव नहीं होता,** क्योंकि वे त्रि-गुणों की मैं-मेरी की नन्हीं सी **कूड़ ख्याली दुनियां से ऊपर उठकर**, किसी पवित्र-पावन **'नानक-प्यार' के सुन्दर प्रेम स्वैपना में**

**विचरण करते हैं** तथा ईश्वरीय रस के **नशे में मतवाले** (intoxicated) **होकर 'प्रिम-खेल' खेलते हैं।** वे ईश्वरीय मंडल, निज घर, **'बेगम पुर' के वासी होते हैं,** जहाँ 'द्वैत-भाव' या अहम् अथवा **मैं-मेरी का अंश लेश-मात्र भी नहीं होता।**

पानी के वेग या हवा के प्रवाह की भाँति गुरमुख जनों में **परोपकार के उमाह का वेग, नित्य नवीन रंगों-रूपों तथा चाव में उत्पन्न होता तथा प्रकाशमान होता रहता है।** इस प्रकार वे स्वतः भोले-भाव, निःस्वार्थ तथा **निष्काम सेवा करते रहते हैं** तथा 'फूल' की भाँति अपना 'आपा' बाँटना, लुटाना बिखेरना **उनका कुदरती स्वभाव ही बन जाता है।** गुलाब के फूल की भाँति उनके जीवन का प्रत्येक पल, प्रतिक्षण, हर घड़ी, दिन-रात, **सारी उम्र परोपकार तथा सेवा में गुज़रता है।**

**ब्रहम गिआनी परउपकार उमाहा ।।** (पृ २७३)

इस 'नानक प्यार' की मस्ती मे स्वंय को न्यौछावर करते हुए, गुरमुख जन हर प्रकार की **कुरबानी तथा शहीदी खुशी-खुशी हँसते हुए दे डालते हैं** तथा शुक्राने में, **'तेरा कीआ मीठा लागै ।। हरि नामु पदारथु नानक मांगै ।।'** के शबद का उच्चारण करते हैं। ऐसी आत्मिक शहीदियों तथा कुरबानियों के, गुरू साहिबान तथा गुरू सिक्खों के इतिहास में अनेक **अद्वितीय** उदाहरण मिलते हैं।

परन्तु ऐसे परोपकारी गुरमुख जन संसार में विरले ही होते हैं —

**कोटि मधे को विरला सेवकु होरि सगले बिउहारी ।।** (पृ. ४९५)

हैनि विरले नाही घणे फैल फकड़ु संसारु ।। (पृ. १४११)

ऐसे गुरमुख प्यारों की चुप में भी, **'सेवा' तथा परोपकार है** जिस प्रकार प्रकृति के अनेक जिव्हाहीन तथा बोली हीन जीव 'अन्तर्गत लिखे हुकुम' अनुसार सृष्टि की **अबोल तथा अदृष्ट ढंग से सेवा कर रहे है ।**

गुरमुख प्यारों की **'चुप-प्रीत'** द्वारा अनेक होनकार रूहों को **अबोल-बोली में अनुभव द्वारा ईश्वरीय 'प्रेम-सन्देश' अथवा नाम रस की 'छुह' भोले-भाव' ही मिल जाती है।**

घाल न मिलिओ सेव न मिलिओ मिलिओ आइ अचिंता ।। (पृ ६७२)

यह **दिव्य बख्शिश**, आत्मिक जिज्ञासुओं की रूहों के लिए, ईश्वरीय मंडल का —

जादू है
चमत्कार है
साधना है
सेवा है
परोपकार है
आदान-प्रदान है
वाणिज्य-व्यापार है
प्रिम-खेल है
नाम-निधान है
प्रेम-स्वैपना है
शबद है
गुरप्रसादि है।

परन्तु यह **ईश्वरीय 'प्रिम-खेल' हमारी सीमित बुद्धि की पकड़ से परे है।** इस 'प्रिम-खेल' को कोई बख्शा हुआ गुरमुख जन ही समझ, बूझ, चीन्ह तथा **अनुभव कर सकता है**, जो चौथे-पद, परम-पद, आत्म-मंडल, **'तत्त-योग' का वेत्ता हो।**

से भगत से सेवका जिना हरि नामु पिआरा ।। (पृ ७३३)

सेवकु सेवा तां करे सच सबदि पतीणा। (पृ ७६७)

ऐसो जनु बिरलो है सेवकु जो तत जोग कउ बेत्तै ।। (पृ १३०२)

गुरमुख जन अपने दाता सतिगुरू के —

'नानक प्यार' की **'प्रणाली' बन कर**
**ईश्वरीय 'हथियार' बन कर**
दिव्य बख्शिशों का **प्रमाण** बन कर
प्रिम-प्याले का **साथी** बन कर
कृपा की **वर्षा** बन कर
नाम सूर्य की **'धूप'** बन कर
नाम-फूल की **'महक'** बन कर

माँ-प्यार की **'ममता'** बन कर
शबद का **'रस'** बन कर
जीवन रौं की **'रवानगी'** बन कर
ईश्वरीय 'नाद' का **सुर** बन कर
**'बैखरीद सेवक'** बन कर
**हुकुम में कार्य करता हुआ,** सहज स्वभाव अपने **'आप' को** —
पिंजता
न्यौछावर करता
कुरबान करता
बाँटता
बिखेरता
लुटाता
मुस्कराता
प्रकाशित करता
हुआ, गुरबाणी की इस पंक्ति का **सही अर्थों में पालन कर रहा होता है।**

**आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु ।।** (पृ ४७४)

मायिकी मंडल का मान-सम्मान तथा 'वाह-वाह' हमारे **अहम् को चारा डाल कर तगड़ा करती है** तथा कर्म-बद्ध करती है । परन्तु आत्मिक मंडल में यह मान, महिमा जिज्ञासु को **शुक्राने में ले जाती** हुई, और कृपा तथा बख्शिशों **का पात्र बनाती है।**

इस तथ्य को समझने के लिए, उस **बाँसुरी** को याद करें, जिस का अपना मूल्य तो **एक कोड़ी** ही था — परन्तु जब कृष्ण मुरारी के होठों से लगकर उस में से दिव्य नाद बजा, तब वह **'लाखों' की बन गयी ।**

इसी प्रकार जब गुरू अपने सेवक को अपने दर-घर से नाम का रस तथा **'नानक-प्यार' की 'दात' प्रदान कर के अपनी 'सेवा' में लगाता है, तब** वह सेवक **लाखीना (अनमोल)** बन जाता है।

आढ दाम को छीपरो होइओ लाखीणा ।। (पृ ४८७)

इस आत्मिक **'प्रिम-खेल'** में अनोखी बात यह है कि सतिगुरू अपने सेवक को अपनी जीवन-रौं, नानक-प्यार, **नाम का रस तथा शबद की अनहद धुन की**

**दिव्य दात प्रदान करके, इन बख्शिशों को आगे बाँटने तथा 'बिखेरने' के लिए,** सेवक को अपनी **'प्रणाली' या 'प्रवाह' बनाकर उसे मान-यश बख्शता है।**

**गुर की सेवा सो करे जिसु आपि कराए ॥ (पृ. ४२१)**

**जिन कंउ हरि प्रभि किरपा धारी ते सतिगुर सेवा लाइआ ॥ (पृ. ५७३)**

**मुकति भुगति जुगति तेरी सेवा जिसु तूं आपि कराइहि ॥ (पृ. ७४९)**

**तेरी सेवा सो करे जिस नो लैहि तू लाई ॥ (पृ. १०११)**

यह समस्त ईश्वरीय **'प्रेम-खेल' है, जिस में 'दाता' की अनन्त** —

**कृपा**

**बख्शिश**

**कृपा-दृष्टि**

**प्यार**

**हुकुम**

**गुरप्रसादि**

**ही पूर्वत्त हो रहा है।**

The whole cosmic Drama is an expression and manifestation of Divine Will, Divine Love and Divine Grace.

इस अनन्त ईश्वरीय **खेल-अखाड़े** (Cosmic Drama) में **'सेवक'** एक नन्हें से **'पुर्जे' के रूप में हुकुम में कार्य** करता हुआ, **सतिगुरू की प्रीत, प्रेम, रस, रंग चाव में इतना डूब जाता है कि उसे अपने पृथक अस्तित्व अथवा अहम् का अहसास ही नहीं रहता ।**

दूसरे शब्दों में **सतिगुरू के** —

'प्रिम रस' की **मस्ती में**

शबद की **अनहद धुन में**

हुकुम की रवानगी के **शक्तिशाली वेग में**

**'सेवक' के मन की 'मर्जी' या सयानप निर्बल तथा निर्जीव हो जाती है** तथा उसे अपने पृथक 'अहम्' अथवा **मान-सम्मान का ख्याल ही नहीं रहता।**

उपरोक्त विचार अनुसार, **गुरू स्वयं ही अपने सेवक पर कृपा-दृष्टि करके, अपनी प्रीत, प्रेम, रस, चाव तथा नाम का रस प्रदान कर 'नानक-घर' का बे-खरीद सेवक बना लेता है तथा गुरू घर की सेवा में लग कर,**

**उस का जीवन 'लोक सुखी तथा परलोक सुहेला' हो जाता है।**

इस प्रकार **गुरू का 'सेवक'** —

ईश्वरीय **हुकुम बूझ कर**
ईश्वरीय **भाणा मान कर**
जीवन-रौं की रवानगी में **'सुर' होकर**
गुरू के प्यार में **'बै-खरीद सेवक' बन कर**
**'हुकुमी बंदा'** बन कर
गुर प्यार की **'शमा' पर स्वयं न्यौछावर होकर**
क्षण-क्षण, पल-पल, दिन-रात **सारा जीवन 'बलिदान' करके**
अपने तन-मन को **'पीसता' हुआ**
**सेवा की दुष्वार साधना** करता हुआ

**गुरू की प्रेममयी तथा मीठी गोद में विलीन हो जाता है । यही 'सेवक' की साधना की पूर्णता है, जिस में** —

**गुरू, सेवक** तथा **सेवा**

एक ही दिव्य **प्रेम-स्वैपना की डोर के मोती होते हैं,** जिनका अलग-अलग स्तर (wave length) पर आत्मिक लिश्कों का प्रकटाव संसार में प्रकाशमान होता रहता है।

**ओति पोति सेवक संगि राता ।।**
प्रभ प्रतिपाले सेवक सुखदाता ।। (पृ. १०१)

इस आत्मिक मंडल के **उच्च माहोल में, 'सेवक'— गुरू में 'विलीन' होकर उसका ही 'स्वरूप' बन जाता है।**

जिन सेविआ जिन सेविआ मेरा हरि जी **ते हरि हरि रूपि समासी।।**(पृ. ११)

जो तुधु सेवहि सो तूहै होवहि तुधु सेवक पैज रखाई ।। (पृ. ७५८)

**जो तुधु सेवहि से तुध ही जेहे निरभउ बाल सखाई हे ।।**(पृ. १०२१)

**तुधुनो सेवहि से तुझहि समावहि तू आपे मेलि मिलाइदा।।**(पृ. १०६०)

**हरि का सेवकु सो हरि जेहा ।।**
**भेदु न जाणहु माणस देहा ।।** (पृ. १०७६)

गुरबाणी की इन पंक्तियों को गुरू साहिबान ने **स्वयं कमाया तथा हमें**

**'आत्मिक सेवा' की ठीक विधि सिखलायी ।** इन पदचिन्हों पर चलते हुए अनेक गुरू सिक्खों ने भी **निर्मल, निःस्वार्थ, निष्काम, 'आत्मिक सेवा' की** है।

**जब गुरमुख जन बख्शी हुई दिव्य दात —**

नानक-प्यार
प्रिम-रस
सिमरन
रुन झुन
चाव
खिड़व
जीवन-दान

आदि **को अपनी —**

प्रेमपूर्ण दृष्टि
मीठे वचन
प्रेम 'छुह'
जीवन-किरणों
कृपा दृष्टि

**द्वारा —**

चुप-चाप
सहज-स्वभाव
अनजाने
गुप्त रूप में

**अन्य अभिलाषी जिज्ञासुओं से, 'वाणिज्य-व्यापार' अथवा 'आदान-प्रदान', सांझ करता है, तब वह गुरमुख जन, आत्मिक मंडल की —**

**श्रेष्ठ**
**पवित्र**
**निर्मल**
**निःस्वार्थ**
**निष्काम**

**'ईश्वरीय सेवा' कर रहा होता है, तथा आत्मिक जीवन की गगनचुम्बी पूर्णता को छूता है।**

जनम मरण दुहहू महि नाही जन परउपकारी आए ।।
**जीअ दानु दे भगती लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए ।।** (पृ. ७४९)

**मायिकी अज्ञानता के कारण —**

मोह-माया में गलतान
भ्रम-भ्रान्तियों में भटकती
फोकट कर्मों-धर्मों में लिप्त
'कूड़ क्रिया' में उलझी

**किसी होनकार अभिलाषी 'रूह' को —**

मायिकी मंडल के अन्धकार में से निकालकर
**आत्मिक अनुभवी ज्ञान की सूझ दे कर**
ठीक आत्मिक **'मार्ग-दर्शन' दे कर**
**साध संगति में लगा कर**
**आत्म मार्ग में लगाना** तथा
**'जीवन-दान' प्रदान करना ही**

**आत्मिक मंडल की अति —**

ऊँची
पवित्र
श्रेष्ठ
**उत्तम**
**अनुभवी**
**करामाती**

**ईश्वरीय सेवा है।**

**ऐसी अनुभवी आत्मिक करामाती सेवा — गुरू के बख्शे हुए, गुरमुख प्यारे, महा पुरुष, साध, संत, भक्त, हरिजन, प्यारे ही कर सकते हैं।**

**इस प्रिम-खेल की सेवा-भावना के लिए —**

'पैरी पै पारवाक होइ छडि मणी मनूरी'
'मुरदे वांग मुरीदु होइ करि सिदक सबूरी'
**'गुर की बचनी हाटि बिकाना'** होकर
**'मुल खरीदी लाला गोला'** बन कर
'स्वयं' को न्यौछावर करना'
**हुकुम के गुरप्रसादि की पालना है।**

(समाप्त)